www.krishipravahika.com

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2022) वर्ष 2, अंक 1, 12-13

Article ID: 135

लौकी की वैज्ञानिक खेती

ओम प्रकाश जीतरवाल*, बाबू लाल धायल*, केशर मल चौधरी, परवीन***

*चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार (हरियाणा)

*श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर (राजस्थान)

लौकी एक कुकुरबिटेसी कुल की महत्वपूर्ण सब्जी है इसको घीया के नाम से भी जाना जाता है इसके फल मुलायम होते है फलो में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा, खनिज लवण व प्रचुर मात्रा में अनेक विटामिन्स पाये जाते है लौकी ठंडी प्रकृति की सब्जी है इसके फल सुपाच्य होने के कारण चिकित्सक रोगियों को लौकी की सब्जी का अधिक सेवन करने की सलाह देता है लौकी से सब्जी के अलावा अन्य उत्पाद भी बनाये जाते है जैसे खीर, रायता, कोफ्ते, आचार, मिठाई आदि जो अच्छे पौष्टिक व स्वादिष्ट होते है इसका उपयोग कब्ज कम करने, पेट साफ करने में भी अत्यंत लाभकारी है।

जलवायु - लौकी की अच्छी पैदावार लेने के लिए गर्म व आर्द्र जलवायु वाले भौगोलिक क्षेत्र उत्तम रहते है लौकी की फसल जायद व खरीफ दोनों ऋतुओ में अच्छी उपज देती है पोधो की बढ़वार के लिए 30 से 38 डिग्री सेल्सियस तापमान सर्वोत्तम रहता है।

भूमि - जीवांश युक्त बलुई दोमट भूमि जिसकी जल धारण क्षमता अच्छी हो उत्तम रहती है उचित जल निकास की व्यवस्था होनी चाहिए भूमि का पी एच मान 6.5 से 7.5 तक उत्तम रहता है।

भूमि की तैयारी - बिजाई से 3 से 4 सप्ताह पहले गोबर की अच्छी सड़ी हुई खाद खेत में मिला देनी चाहिए फिर 3 से 4 बार अच्छी जुताई करे हर जुताई के बाद पाटा लगाना चाहिए।

उन्नत किस्मे -

पूसा सन्देश - इस किस्म के पौधे मध्यम लम्बाई के व गांठो पर शाखाएँ कम दूरी पर विकसित होती है फल गोलाकार, मध्यम आकार के व लगभग 500 से 600 ग्राम वजन के होते है गर्मी वाली फसल की प्रथम तुड़ाई 60 से 65 दिन बाद की जा सकती है व वर्षा ऋतु वाली फसल की प्रथम तुड़ाई 55 से 60 दिन पर करते है औसत उपज 315 से 325 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होती है।

पूसा नवीन - इस किस्म के फल बेलनाकार, सीधे लगभग 500 से 550 ग्राम वजन के होते है इस प्रजाति की उत्पादन क्षमता 350 से 400 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होती है।

पूसा समर प्रोलीफिक लॉन्ग - यह किस्म गर्मी व बरसात दोनों ऋतुओ में उगाने के लिए अच्छी है इस किस्म में फलो की संख्या काफी होती है बेलो की बढ़वार भी अच्छी होती है कच्चे फलो की लम्बाई 40 से 50 सेंटीमीटर व फलो का रंग हल्का हरा होता है इसकी औसत पैदावार 56 से 60 क्विंटल प्रति एकड़ है।

पूसा समर प्रोलीफिक राउंड - यह किस्म गर्मी व बरसात दोनों ऋतुओ में उगाई जाती है इसके कच्चे फलो की लम्बाई 15 से 18 सेंटीमीटर गोल घेरे के व हरे रंग के होते है अच्छी पैदावार देने वाली किस्म है।

हिसार घीया संकर -35 - यह एक संकर किस्म है इसके फल बेलनाकार व बेल पर ज्यादा मात्रा में लगते है तथा बेलो की अच्छी बढ़वार होती है इस किस्म को वर्षा व गर्मी दोनों ऋतुओ में उगाया जाता है कच्चे व हरे खाने योग्य फलो की लम्बाई 25 से 30 सेंटीमीटर होती है अच्छी उपज प्राप्त होती है।

बीज बोने का उत्तम समय - गर्मी की फसल के लिए फरवरी से मार्च व बरसात की फसल के लिए जून से जुलाई का समय उत्तम रहता है।

बीजदर - सीधी बुआई के 25 से 3 किलोग्राम बीज एक हेक्टेयर के लिए पर्याप्त रहता है नर्सरी के लिए 1 किलोग्राम बीज काफी है।

बुआई की विधि - लौकी की बुआई के लिए गर्मी के मौसम में 4 से 45 मीटर की दुरी पर 50

सेंटीमीटर चौड़ी व 20 से 25 सेंटीमीटर गहरी नालिया बना ले इन नालियों के दोनों किनारे पर 60 इ 75 सेंटीमीटर गर्मी वाली फसल में व 80 से 85 सेंटीमीटर वर्षा वाली फसल की दूरी पर बीज की बुआई करते है एक स्थान पर 2 से 3 बीज 4 सेंटीमीटर की गहराई पर बोना चाहिए।

सिंचाई - खरीफ में सिंचाई की आवश्यकता कम होती है फिर भी यदि वर्षा न हो तो 10 से 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करे व गर्मियों में अधिक तापमान के कारण 4 से 5 दिन के अंतराल पर सिंचाई करे

वृद्धि नियामकों का प्रयोग - दो चार पत्तियां आने की अवस्था में पतों पर 4 मिली लीटर इथ्रेल के घोल को 20 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करे इससे मादा फूल ज्यादा संख्या में आते है व पैदावार बढ़ जाती है को भी चिपचिपा पदार्थ घोल में मिला ले जिससे हार्मोन पतियों पर आसानी से रुक जाता है।

खरपतवार प्रबंधन व निराई गुड़ाई - खेत में काफी मात्रा में खरपतवार उग जाते है जो की उत्पादन व गुणवत्ता को प्रभावित करते है खरपतवार नियंत्रण के लिए 2 से 3 गुड़ाई करनी चाहिए अतः उनको खुरपी की सहायता से 25 से 30 दिनों में निराई करके निकल देना चाहिए। जड़ो के पास मिटटी चढ़ा देना चाहिए रासायनिक खरपतवार नाशी के रूप में ब्यूटाक्लोर 2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई के तुरंत बाद छिड़काव करे

फलो की तुड़ाई व उपज - फलो की तुड़ाई मुलायम अवस्था में करनी चाहिए। फलो की तुड़ाई डंठल लगी अवस्था में किसी तेज चाकू से करनी चाहिए एवं चार से पांच दिन के अंतराल पर करना चाहिए ताकि पौधे पर ज्यादा फल लगे , औसत उपज 350 से 500 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

कीट व रोगो का प्रबंधन - लौकी में रेड पम्पकिन बीटल, लाल कीट, फल मक्खी, माइट, तेला, चेपा, जड़ सूत्रकृमि का प्रकोप होता है ।

लाल कीट - इसकी सुंडी व वयस्क दोनों नुकसान पहुंचाते है प्रौढ़ पोधो की पतियों को ज्यादा क्षति पहुँचाते है ये कीट जनवरी से मार्च तक सक्रिय होते है व अक्टूबर तक प्रकोप रहता है इसके रोकथाम के लिए 25 मिलीलीटर साइपरमेथ्रिन 25 ईसी या 30 मिलीलीटर फेनवेलरेट 20 ईसी नाम रसायन के घोल को 100 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करे व जैविक नियंत्रण के लिए एजाडिरेक्टिन 300 पीपीएम या 5 से 10 लीटर या एजाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत 105 मिलीलीटर प्रति लीटर की दर से दो या तीन छिड़काव करे तेला, चेपा, माइट के लिए मेलाथिऑन 250 मिलीलीटर 50 ईसी प्रति लीटर और मेलाथिऑन 50 ईसी प्रति 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी को लेकर 10 प्रतिशत शीरा या गुड़ मिलाकर जहरीले चारे को 250 जगहों पर 1 हेक्टेयर खेत में उपयोग करना चाहिए या मेलाथिऑन का 400 मिलीलीटर 200 से 250 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करे।

रोग - चूर्णिल फफूंद रोकथाम के लिए 8 से 10 किलोग्राम गंधक का चूर्ण प्रति एकड़ छिड़काव करे फ्युसिलाजोल 1 ग्राम प्रति लीटर या हेक्साकानाजोल 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर या मैक्लोबुटानिल 1 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी के साथ 7 से 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करे।

मृदुरोमिल फफूंदी - बीज को मेटल एक्सेल कवकनाशी की 3 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज से उपचारित क्र बोना चाहिए तथा मेंकोजेब 0.25 प्रतिशत पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे। छिड़काव रोग के प्रारंभिक लक्षण आने के तुरंत बाद करे संक्रमण ज्यादा हो तो मेंकोजेब 2.5 ग्राम प्रति लीटर या मेटीरेम 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी के साथ घोल बनाकर 7 से 10 दिन के अंतराल पर 3 से 4 बार छिड़काव करे।

विषाणु रोग - इससे बचने के लिए रोगग्रस्त पोधो को उखाड़कर जला देना चाहिए। रोगवाहक कीटो के लिया इमिडा क्लोरोप्रिड 0.3 मिलीलीटर प्रति लीटर का घोल बनाकर दस दिन के अंतराल में 2 से 3 बार छिड़काव करे।